प्रस्तुतकर्ता

संजय भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर – समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र

नई शिक्षा नीति – 2020

इकाई – प्रथम

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (माइनर एंड मेजर)

पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं

उपशीर्षक- ज्ञानोदय एवं समाजशास्त्र

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

ज्ञानोदय एवं समाजशास्त्र

1-व्यक्ति की स्वतंत्रता

2-युक्तिपूर्णता

3-नवीन कार्यशैली

4-उपयोगितावाद

5-विज्ञान और प्रौद्योगिकी

समाजशास्त्र के बौद्धिक स्रोत के रूप में ज्ञानोदय को चिन्हित करते हैं। इसका आर्थिक, सामाजिक आधार उद्योग, पूंजीवाद तथा मध्यम वर्ग है। जबकि इसका बौद्धिक स्रोत ज्ञानोदय है। हरबर्ट मरक्यूज के अनुसार -प्रत्यक्ष रूप से समाजशास्त्र का जन्म सामाजिक दर्शन की कोख से हुआ। परंतु ज्ञानोदय ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत था। ज्ञानोदय विचारों के उस संकलन को या विचारधारा को कहते हैं जो व्यापार और उद्योग के कारण प्रचलित हुई। इंग्लैंड में थॉमस हाब्स, लॉक, एडम स्मिथ, डेविड ह्यूम तथा फ्रांस में रूसो, वाल्टेयर, वाइको आदि जो विचार दे रहे थे। उन्हें ही ज्ञानोदय कहां गया अलग-अलग विद्वान अलग-अलग देशों में इनके विचारों में कुछ नवीनता जरूर थी। परंतु सामान्य तौर पर मूल विचारों में समानता थी। आधुनिकीकरण, धर्मनिरपेक्षता ज्ञानोदय के अंग है। ज्ञानोदय की विचारधारा बहुत ही व्यापक जटिल और बहुआयामी है जिसे हम निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं।

1. प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र स्वायत्त है उसकी अपनी अस्मिता है और वह भाईचारे के आधार पर संगठन बना सकता है। फ्रांसीसी क्रांति में भी स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा का उल्लेख किया गया। जिससे कि नारी, दास, हब्शियों तथा कमजोर को आजादी मिल सके रूसो ने भी कहा था- "व्यक्ति जन्म से स्वतंत्र होता है, उसे समाज बेड़ियों से जकड़ देता है।"

2. युक्ति पूर्णता ज्ञानोदय का अंग है जिसके कारण लोग तर्क वितर्क करने लगे और वैज्ञानिक कसौटीओं का पालन कर नए निष्कर्षों को निकालने लगे जिससे समाज में धर्म और विश्वास कमजोर पड़ने लगा।

3. ज्ञानोदय अपने कार्यशैली में अनुशासन, संगठन, मूल्यांकन और परिवर्तन को सम्मिलित करता है जिसमें की उद्देश्य वास्तविक और सांसारिक एवं प्राप्त करने योग्य रखे जाते हैं। जॉर्ज सिमेल ने कहा "यह गणनात्मक समाज है जिसमें निवेश और निश्चित लाभ की बात कहीं जाती हैं।"

4. ज्ञानोदय में उपयोगितावाद को भी स्थान दिया गया है अब समाज में यह चर्चा होने लगी है। राज्य का कार्य मानव का कल्याण करना है। जिससे राज्य में धर्म की कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए, ज्ञानोदय के कारण सामंती मूल्य एवं सिद्धांत को अनुपयोगी ठहरा दिया गया।

5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी को ज्ञानोदय में सर्वाधिक महत्व दिया गया अभी तक लोग वैज्ञानिक आविष्कारों को स्वीकार नहीं कर रहे थे तथा वैज्ञानिक अविष्कार करने वाले लोगों को दंड दिया जा रहा था। वही अब विज्ञान और प्रौद्योगिकी को स्वतंत्र रूप से बढ़ने की एवं आविष्कार

करनी थी स्वतंत्रता दे दी गई तथा उसके सिद्धांतों तथा अधिकारों को स्वीकार किया जाने लगा।

अतः ज्ञानोदय का अभिप्राय व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व, युक्तिपूर्णता, अनुशासन, वैज्ञानिक विचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के स्वतंत्र विकास से है। थियोडर एडार्नो ने ज्ञानोदय की विचारधारा की आलोचना किया पश्चिम ने इसके माध्यम से विश्व वर्चस्व की मानसिकता को विकसित किया। अगस्त काम्ट ने भी ज्ञानोदय के सभी विचारों को नहीं माना क्योंकि वे फ्रांसीसी क्रांति विरोधी थे। हिंसा के विरोधी थे। परंतु उन्होंने भी समझ लिया विज्ञान और युक्तपूर्णता अब पीछे हटने वाले नहीं हैं। इसलिए उन्होंने नैतिकता और विज्ञान दोनों की बात को स्वीकार किया और कहा कि दोनों साथ-साथ चलेंगी एमिल दुर्खीम जो कि अगस्त काम्ट के बौद्धिक उत्तराधिकारी ने भी नैतिकता पर बहुत अधिक बल दिया।

संदर्भ ग्रंथ-

1.हुसैन,मुजतबा, 2012, समाजशास्त्री विचार, ओरियंट ब्लैक स्वान, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

2. मुखर्जी, रविंद्र नाथ, 2000, सामाजिक विचारधारा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।

3. अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017, समाजशास्त्र, बी़. ए. तृतीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

4. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5. दोस्ती, यस. एल., 2010, आधुनिक समाजशास्त्री विचारक, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6.रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

7. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा

8.अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 , समाजशास्त्र, बी़. ए. प्रथम वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस, आगरा।